SAMBODHI

ACCEPTANCE LETTER

Dear authors,

It's my pleasure to inform you that, after the peer review, following list of papers has been ACCEPTED with content unaltered to publish with *Sambodhi Volume: 46, Issue No:2 January – March 2021 (ISSN: 2249-6661).*

S.No	Author's Name	Title of the Paper
1	ॉ. संदिप म. राऊत	मुस्लीम समाजसुधारना विशयक 'हमीद दलवाई' इनके विचार एवं कार्य

In order to fit into the publishing and printing schedule, please re-submit your complete publication package by directly replying this acceptance within 3 days.

If you failed to prepare your complete files on time, the publication of your article might be delayed. Though the reviewers of the journal already confirmed the quality of your paper's current version, you can still add content to it

To help the editor of the journal process your final paper quickly, you need to prepare your paper based on the given journal format.

Again, thank you for working with Sambodhi. I believe that our collaboration will help to accelerate the global knowledge creation and sharing one step further. Sambodhi looks forward to your final publication package. Please do not hesitate to contact me if you have any further questions.

Editorial Board

Sambodhi

ISSN No: 2249-6661 (Print)

SAMBODHI

A Quarterly Peer Reviewed, Referred Research Journal
Volume : 46, Number : 2 (January - March) Year : 2021
UGC Care Listed Journal

L.D. INSTITUTE OF INDOLOGY

459-1

Sambodhi Journal

ISSN No: 2249-6661 UGC Care Listed Journal

Volume: 46, No. 2 (January - March) Year : 2021

Version-2

Editor-in-Chief

Dr. J.B Shah

UGC Care Approved International Indexed and Referred Journal

IMPACT FACTOR: 5.80

Published By: Lalbhai Dalpatbhai Institute of Indology

CONTENTS

DYSTOPIAN AGE OF PANDEMIC : THE CHALLENGE OF NATIONAL SECURITY RAMIFICATION

Dr Partha biswas 334

RISE OF HYBRID CULTURE IN AN ALIEN LAND IN THE NAMESAKE BY JHUMPA LAHIRI

Garima Joshini[1] & Dr.Nilofarakhtar[2] 338

RELATIONSHIP BETWEEN ACADEMIC STRESS PERFORMANCE AND STREES MANAGEMENT STRATEGIES OF HIGHER SECONDARY STUDENTS OF DIFFERENT STREAMS IN BILASPUR CITY.

Dr.Archana Agrawal[1] & Kiran Pal Sing[2] 341

A STUDY ON INDIAN SUGAR INDUSTRY AN HISTORICAL OVER VIEW

Dr.A.Thaha Sahad[1] & M.Dorvelu[2] 348

TRAVEL ROUTE PLANNING FOR ECO-TOURISTS OF JUNGLE MAHALS OF WEST BENGAL

Sanijb Mahata 352

A STUDY OF ENVIRONMENTAL IMPACT OF LEATHER INDUSTRY IN TAMIL NADU WITH SPECIAL REFERENCE TO VELLORE DISTRICT

Dr. A.Royal Edward Williams[1] & Mr.M.P.Parvez Ahmed[2] 362

NOTABLE DEPICTION OF OPPRESSED LIFE: MULK RAJ ANAND, FEARLESS VOICE OF "BAKHA"

Prabodh Mandal 367

मुस्लीम समाजसुधारना विशयक 'हमीद दलवाई' इनके विचार एवं कार्य

डॉ. संदिप म. राऊत 370

IMPACT OF COVID-19 ON THE ECONOMY OF INDIA ECONOMY OF INDIA RELATED TO LIFE STYLE, ATTITUDE & BEHAVIOR OF PEOPLE IN SOCIETY

Dr.Rashmi Gupta 372

ISSN: 2249-6661
Vol-46, No.-2, January - March (2021)

मुस्लीम समाजसुधारना विषयक 'हमीद दलवाई' इनके विचार एवं कार्य

डॉ. संदिप म. राऊत

इतिहास विभाग प्रमुख ए भारतीय महाविद्यालय, मोर्शी ए ता. मोर्शी, जि. अमरावती

Abstract

प्राचीन काल से ही भारत में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक परम्परा चलती आ रही है। वैदिक, जैन, बौध्द, पारसी इस्लाम एवं शिख इन धर्मो के समन्वय के व्दारा भारत का सांस्कृतिक जीवन समृध्द होता चला आ रहा है। इन सभी धर्मो मे कई रुढी, प्रथा, परम्परा, रितिरिवाज कर्मकाण्ड दिखाई देते है, किन्तु इनमें से कुछ अनिष्ठ प्रथाए कालबाहय हो चूकी है। ऐसी प्रथाए समाज में अस्थिरता निर्माण करने का कार्य करती है, एसलिए ऐसी प्रथाओं में काल के अनुसार परिवर्तन करना आवश्यक है। इसी समस्या को सुलझाने के लिए सबसे पहीले आधुनिक भारत के निर्माण मे राजा राममोहन रॉय इन्होने आवाज उठाई। इनके साथ–साथ अन्य समाज सुधारको ने अपने विचारोव्दारा समाज सुधारने का कार्य अविरत चालू रखा। इसी परम्परा व्दारा 19 शती एवं 20 शती पूर्वाध्द मे समाज सुधारणा विषयक आंदोलन चलाने की श्रृंखला ही सम्पूर्ण भारत देश में अग्रेसर हुई। किन्तु इस काल के बहुतांश समाज एवं धर्म सुधारक आंदोलन यह हिन्दु धर्म एव परम्परा से निगडीत थी। इसके बावजुद अन्य धर्म के समाज सुधारक भी इस परम्परा से जुडे हुए थे। ऐसी स्थिती में स्वतंत्र भारत मे मुस्लीम समुदाय के सुधारणा हेतू अगर कोई अग्रेसर हूए तो वे थे 'हमीद दलवाई' की, जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन मुस्लीम समुदाय में प्रचलीत रुढी, परम्परा, अंधश्रध्दा आदि को दुर करने में व्यतित किया। और इन्हें एक सत्यशोधक समाज सुधारक के नाम से भी जाना जाता है।1

इन्होने जुबानी तलाक, धर्म सत्यापन, अज्ञान, कट्टरता एवं कर्मष्ठता इनका विरोध करने के साथ–साथ तलाक पिडित मुस्लीम की समस्याओं को दुर करने का और उनके उदरनिर्वाह जैसे को दुर करने का प्रयास कीया। किन्तु इसी बात पर न रुकते हुए उन्होंने मुस्लीम समाज सुधारना हेतू विज्ञानपर आधारित शिक्षा को पुरस्कृत करते हुए समान नागरी कायदा की मांग की।

आज सुधारना क्षेत्र मे हमीद दलवाईजी ने अपने स्वकर्तृत्व से अपना स्वतंत्र अस्तित्व निर्माण कीया। तथा भारतीय समाज के आगे एक नया आदर्श प्रस्थापित करते हुए मुस्लीम समाज सुधारना के आंदोलन में उनका नाम अग्रणी लिया जाता है।

- **जिवन परिचय :**

हमीद दलवाई इनका जन्म 29 सितंबर 1932 मे रत्नागिरी जिले के चिपळून तहसिल क मिरजोळी नायक गाव मे हुआ। उनका पूर नाम हमीद कुमरखान दलवाई था। दसवी पास हुए। मुंबई के इस्माईल युसुफ कॉलेज एवं रुपारेल कॉलेज मे इन्होने इंटरमिडिएट आर्टस् तक की शिक्षा को प्राप्त कीया। उन्होने 1954 से 1963 तक साधारण सेवाए प्रदान की। इसी दरम्यान इनका संपर्क राष्ट्रसेवा दलसे हुआ। मौज, सत्यकथा, यह कथा नियतकालीक में लिखते रहे। 'लाट' यह कथासंग्रह 1960 में साधना में प्रकाशित हुआ। 1966 में मौज प्रकाशन व्दारा 'इंधन' यह उपन्यास प्रसिध्द हुआ। साथ ही 'कफन चोर' इस कथा के कारण वे सर्मथशील लेखक के रुप मे प्रसिध्द हुये। उनको इंधन उपनयास के लिए 1966 मे पारितोषिक भी प्राप्त हुआ।2

हमीद दलवाईजीने मराठा वृत्तपत्र में 1963 से 1968 साल तक पत्रकारिता की, इस के बाद इन्होने पुरा समय मुस्लीम समाज सुधारणा कार्य करने हेतु समर्पित किया। तथा इसके लिए उन्होने अपनी नौकरी का भी त्याग किया। इन्होने मुस्लीम महिलाओंकी दयानिय अवस्था तथा दर्जा सुधारणे हेतु बॉम्बे मे विधानभवन पर मुस्लीम महिलाओं को लेकर 18 एप्रिल 1966 में आंदोलन किया।

22 मार्च 1970 में उन्होने मुस्लीम सत्यशोधक मंडल की स्थापना की एवं मुस्लीम समाज सुधारणा हेतु उन्होने 1966 से 1977 इस काल में बहुत ही महत्वपुर्ण कार्य किए। हमीद दलवाई इनका मृत्यु 3 मई 1977 मे हुआ। इसके पूर्व वे लंबे समय तक किडनी रोग से पिडीत थे। मुस्लीम समाज के विकास के लिए हमीद दलवाई जी के विचार एवं कार्य का अवलंब करना चाहिए धार्मिक सामंजस्य, मुस्लीम महिलाओ का दर्जा, समान नागरी कायदा, राष्ट्रीय एकात्मता साथ ही सुरक्षित संतुलित समाज निर्माण के लिए अथक परिश्रम भी किए। उनके कार्य एवं विचार निम्नलिखित है।

- **मुस्लीम उदबोधन एवं समस्या निवारण** : तत्कालिन महाराष्ट्र का मुस्लीम समुदाय अशिक्षित होने के साथ ही वह धार्मिक प्रथा एवं परंपरा से प्रभावित था। कायदा इनके व्दारा होना चाहिए ऐक मत पुराणमतवादीयो का था। शरियत का कायदा महिलाओं पर अन्याय करनेवाला था। महिलाए समान हक्क से वंचित थी। महिलाओ पर होनेवाले अत्याचार जुबानी तलाक, बहुभःर्या पध्दती, पडदा पध्दत, शिक्षा का अभाव, कुटुंब नियोजन अभाव, समान नागरी कायदा विषयक अनास्था इन सब कारणोंसे मुस्लीम महिलाओं की स्थिती अत्यंत दयानिय थी। तलाक पिडित महिलाओ की स्थिती अत्यंत बिकट थी। इनका समाज के व्दारा शोषण होता था। ऐसी महिलाओ की परिस्थिती बदलने की जरुरत तत्कालिन समय मे थी ऐसे समय मे मुस्लीम समाज मे बिना उद्‍बोधन कार्य के राष्ट्रीय ऐक्य निर्माण होना संभव नाही3 इसी कारण चलते हमीद दलवाई इन्होने मुस्लीम समाज मे सुधारणा एव् उद्‍बोधन कार्य करने का निर्णय कीया। इससे पता चलता है की हमीद दलवाई समाज सुधारणा आंदोलन ने कितने सकिय थे। यह स्पष्ट होता है।

- **मुस्लीम महिला विषयक कार्य** : विश्व में समाज उद्‍बोधन आंदोलन का आरंभ ही स्त्रीदास्य मुक्ती के मुल्यव्दारा होता है। इस विचार सारणी को हमीद दलवाई इन्होने मुस्लीम महिलाओ के मानवी हक्क के मुद्दे को सर्व प्रथम अपने हाथ मे लिया। 18 एप्रिल 1966 मे अपनी पत्नी 'मेहरुनिसा' बहन एवं अन्य पाच महिलाऐ ऐसी कुल सात मुस्लीम महिलाओंका मुक आंदोलन विधानभवनपर ले जाकर, मुस्लीम महिलाओंका जुबानी तलाक, बहुपत्नीत्व, हलाल, बच्चा गोद लेने का विरोध या अनय अन्यायकारक बातो का विरोध इस्लाम के इतिहास में दलवाईजीने पहली बार आवाज उठाया और समान नागरी कायदा की मांग करने वाला आवेदन तत्कालिन मुख्यमंत्री वसंतराव नाईक इन्हे दिया। मुस्लीम महिलाओं के हक्क हेतु आंदोलन करनेवाले दलवाईजी पहिले मुस्लीम समाजसुधारक थे। वे यही पर नही रुके बल्की वे महिलाओं की हक्क की लढाई को लेकर आगे जाने के लिए उन्होने एप्रैल 1968 मे मुस्लीम महिलाओंकी समस्याओं को प्रस्थापित करने के लिए 'सदा–ए–निसवॉ' (महिलाओ की आवाज) यह महिला संघटन निर्माण कर मुस्लीम महिलाओं को न्याय दिलाने का प्रयास किया।4

- **हमीद दलवाई जी के धार्मिक विचार** : हमीद दलवाई इनका मानना है की, "मुस्लीम समुदाय में मेरा जन्म हुआ है" मुस्लीम समुदाय जब हिन्दु उदारमतवादी हिन्दु समाजवादी साथ ही मुस्लीम समाजवादी संदर्भ में आलोचना करने का प्रयास करेगे तब मेरा यह मुस्लीम आलोचना का कार्य बंद हो जाएगा।5 आगे वे कहते है की, हिंदु एवं ख्रिश्चन धर्म की जिस प्रकारसे आलोचना उस धर्म मे जन्म लेनेवाले मतवादी ने की है, इसप्रकारकी इस्लाम की कठोर एवं बुध्दीनिष्ठ आलोचना आजतक कीसी विद्‍वानोने नही की इसका खेद है। क्योकी, ऐसी आलोचना के बीना मुस्लीम समाज सही अर्थ मे उद्‍बोधन व्दारा समाज समता के नाते अन्य के साथ राष्ट्र निर्माण मे सहभागी नाही हो पाऐगा। इसके विरुध्द उसका नियमित अधोगती ही होगी। इसका ज्ञान हमीद दलवाई जी को भलीभाती था। इस अर्थ से दलवाई जी मुलगामी विचारक थे ऐसा सिध्द होता है। जबतक पारंपारिक धर्म संकल्पना के श्रृंखला मे से मुस्लीम समाज मुक्त होता नही तबतक उनके अन्य प्रश्नों का हल नही निकल पाऐंगा। ऐसी दलवाई जी का एकमत था। उनके इस विचारधारा से एवं मुस्लीम धार्मिक विचारधारा में मानवतावादी भुमिका स्पष्ट दिखाई देती है।6

- **हमीद दलवाई जी के शिक्षा विषयक विचार** : मुस्लिमों का भारतीयकरण होना चाहीए ऐसा विचार व्यक्त करते हुए हमीद दलवाईजी कहते है की, "जब

Copyright © 2020Authors

ISSN: 2249-6661
Vol-46, No.-2, January - March (2021)

तक मुस्लिमों मे वैचारीक स्वातंत्र नही होगा तब–तक मुसलमानों में सुधार नही हो सकता" यह भूमीका लेते हुए, दलवाईजीने इस शिक्षा पध्दती का अवलंबन कीया।

मुस्लीम सत्यशोधक मंडलव्दारा आयोजित 1973 में तीन दिवसीय शैक्षणिक परिषद मे उपस्थित रहकर दर्शक को मार्गदर्शन कीया। उन्होंने अपने विचार व्यक्त करते हुए विज्ञानवादी शिक्षा के विचारधारा पर ज्यादा जोर दिया। अपनी भौतिक उन्नति के लिए मुस्लमानों ने प्रादेशीक भाषाओं का अवलंबन करना चाहिए या शिक्षा ग्रहण करनी चाहीए ऐसा संकल्प उन्होंने इस शैक्षणिक परिषद में कीया। इसी परिषद में मुस्लिम वक्फ बोर्ड के धन का दुर उपयोग का हिसाब ट्रस्टी ने लेना चाहिए ऐसी माँग की गई। तथा वक्फ का धन विज्ञान पर आधारीत शिक्षा पर खर्च हो ऐसा सुचित कीया गया। इस शिक्षा परिषद मे कुल 800 सहभागीये इनमे 250 महिलाओं का भी सहभाग था। हमीद दलवाई इन्होंने अपने शिक्षाविषयक विचारो व्दारा विज्ञाननिष्ठ शिक्षा पध्दती एवं प्रादेशिक भाषाव्दारा शिक्षा इन दो तत्वो के आधार पर उन्होने अपने विचार व्यक्त कीए।7

- **हमीद दलवाई इनका साहित्य :** हमीद दलवाई इनका संपूर्ण साहित्य लेखन यह मुस्लीम समाज सुधारणा आंदोलन की नीम मानी जाती है। हमीद दलवाई जी ने अनेक लेख, वर्तमानपत्र, नियमित मासिक व्दारा अपनी लेखणी चलाकर समाज को संबोधित कीया। उन्ही के व्दारा लिखा गया कहाणीसंग्रह 'लाट' 1961 मे प्रकाशित हुआ। इसी कहाणीसंग्रह के 'छप्पर' नामक कहाणी मे मुस्लीम समाज का अज्ञान, पारंपरिक दृष्टीकोन, दारिद्रयता एवं स्वयंव्दारा निर्माण कीया हुआ छप्परबंद पाश मे से बाहर निकालने की असमर्थता एवं परिणाम के रुप मे चुकाई जानेवाले किमत का चित्रण बखुबी कीया है। और इसमे समाज की आधुनीकरण अभाव का चित्र भी प्रदर्शित कीया है।

'लाट' इस कहाणी संग्रह की 'कफनचोर' कहाणी बडी ही विवादीत सिध्द हुई। यह कहाणी समाज की दारिदयता को व्यक्त करती है। हमीद दलवाई इनका दुसरा बहुचर्चित उपन्यास 'इंधन' यह 1965 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यासको 1966 मे महाराष्ट्र शासन का पुरस्कार प्राप्त हुआ। मुस्लीम समुदाय मे सुधारणावादी विचार प्रसारित होने के लिए दलवाई जी ने कीए गए संघर्ष का प्रतिबिंब इस उपन्यास मे दिखाई देता है। 'इंधन' मे मनुष्य का सत्य एवं निर्भय चित्रण आज के पिढी को अस्वस्थ करता है। इसके अलावा भी उन्होने अनेक साहित्यग्रंथो का निर्माण कीया। भारतीय मुस्लीम राजकारण, मुस्लीम जातीय के स्वरुप, कारणे और उपाय (1968), मुस्लीम पॉलिटिक्स् इन सेल्युलर इंडिया (इंग्रजी–1970) ये वैचारिक ग्रंथ उन्होने लिखे। इस्लामा के भारतीय चित्र (1982) यह ग्रंथ उनके मृत्यु के पश्चात प्रकाशित हुआ।

प्रा. शमसुद्दीन तांबोळी के मतानुसार, "हमीद दलवाई यह मुलतः प्रतिभावंत साहित्यकारों के बिच बैठनेवाले सृजनशील, संवेदनशील, ललितलेखन करनेवाले साहित्यीक थे।"8 इन सभी साहित्य ग्रंथोव्दारा हमीद दलवाईजी ने मुस्लीम समाज को उद्बोधीत कीया।

- **मुस्लीम सत्यशोधक मंडल की स्थापना एवं कार्य :** हमीद दलवाईजी का सर्वश्रेष्ठ कार्य उन्होने ही स्थापित कीया हुआ 'मुस्लीम सत्यशोधक' संस्था मे दिखाई देता है। यह क्रांतिकारक प्रयोग केवल भारत के परिप्रेक्ष मे ही नही बल्की संपूर्ण विश्व के इस्लामी विचारधाराओ को दिला देनेवाला सिध्द होते है। मुस्लीम समाज की तलाक पिडीत महिलाओं से लेकर मौलवी के अंधकारमय इस्लामी निष्ठातक और हिन्दु–मुस्लीम संघर्ष से राष्ट्रीय एकात्मता तक असंख्यज्वलंत प्रश्नो संबंधित हमीद दलवाई जी ने अपने लेखणी व्दारा आग लागायी।

मुस्लीम महिलाओं के हक्क के लिए लढाई के लिए उन्होने कई आंदोलन कीए इन आंदोलनों के पश्चात उन्होंने एक बैठक का आयोजन कीया।- जिसमे डॉ. बाबा आढावा इन्होने इस संघटन को 'मुस्लीम सत्यशोधक मंडल' के नाम से घोषित कीया। इस तरह 22 मार्च 1970 मे 'सत्यशोधक मंडल' की स्थापना की गयी। मुस्लीम सत्यशोधक मंडल के प्रथम ए. जे. शेख कुछ दिनो तक अध्यक्ष रहे। उनके उपरांत बाबुमिया बेंडवाले अध्यक्ष बने अमरावती के वजीर पटेल इन्होने इसी अंतर्गत 'यंग मुस्लीम असोसिएशन' की स्थापना की और इसी असोसिएशन व्दारा अपने कार्य को आगे बढाया। इनके अलावा मरियम रफाई, सय्यद मुनिर, हुसेन दलवाई, अब्दुल कादर, मुकादम, अन्वर शेख, अमिर शेख इत्यादी कार्यकर्ताओं ने इस संघटन मे शामिल होकर समाज उद्‌बोधन का कार्य कीया। इस आंदोलन के क्रांतिकारी विचार दिड–दो पन्ने के जाहिरनामा मे दिखाई देते है। इस जाहिरनामा मे मध्यवर्ती मजदुर इस तरह है। "मुस्लीम समुदाय के उद्‌बोधन आरंभ काल मे प्रयासो के अतिरिक्त केवल निराशा ही उत्पन्न हुई।" सर सय्यद अहमद खान को सुधारणा विषयक विचारधारा विभक्तवादीयों को दलदल मे फस गया। हिन्दु समुदाय मे पुरोगामित्व का प्रयास चलते समय मुस्लीम समाज केवल काल से संबंधित बदले के विरोध मे छटपटा रहा था। बहुसंख्य हिन्दु परिवर्तनवादी मंडली यह जाने–अनजाने मे इस प्रकिया ने साथ देते थे। इन बदली हुई परिस्थितीओं का ज्ञान एवं आव्हान समाज स्विकार नही कर पाया। प्रजासत्ताक भारत में मुस्लीम समाज एक सन्माननीय घटक के तौर पर खडा रहने के लिए लोकशाही, धर्मनिरपेक्ष, समतावादी मुल्य स्विकार अगर नही करते तो संविधान की नीव कमकुवत रहेंगी। इसलिए यह कार्य पूर्ण हो इसके पक्ष मे मुस्लीम सत्यशोधक मंडल की स्थापना की गईं।

मुंस्लीम सत्यशोधक मंडलने प्रारंभी हर एक कार्यकम को हाथ मे लिया। मुस्लीम महिलाओं को पुरुषप्रधान विचारधाराओंसे मुक्त कर उन्हे संविधानिक हक देना, समान नागरी कानून की मांग करणा, जमातवादी–विघटनवादी विचारधाराओं का विरोध करना, मुस्लीम समाज को आधुनिकता की ओर ले जाना, आधुनिक शिक्षा, प्रादेशिक भाषाओंका सम्मान करना, कुटुंब नियोजन करना इन सभी मुद्दो को आधार बनाकर 'सत्यशोधक मंडल' यह हमीद दलवाई जी के नेतृत्व मे कार्य करने लगा। 1973 मे 'मुस्लीम सत्यशोधक पत्रीका' का आरंभ हुआ। अनेक परिषदो का आयोजन कीया गया। दलवाई इनके कार्य एवं कर्तृत्व की अमीट छाप इस मंडल पर दिखाई देती है। उनके मृत्यु के पश्चात भी इस मंडल ने अनेक समाजसुधारक कार्य कीए। पहिले दस सालो में हमीद दलवाई इनके नेतृत्व में मुस्लीम सत्यशोधक मंडल ने श्रेष्ठ स्थान प्राप्त कीया। इसलिए यह दशक मंडल का स्मरणीय दशक माना जाता है। मनुष्य विकास मे धर्म अडिग ना हो इसलिए धर्म समाजसुधारणा की जानी चाहीए ऐसा उनका मत था। आधुनिक भारत के इतिहास मे सत्यशोधक हमीद दलवाई इनका नाम समाजसुधारक कमवारी मे लिया जाता है। उनके कार्य यह मुस्लीम समाज को योग्य दिशा देनेवाला सिध्द होता है। उनके विचार और कार्य का परिणाम आधुनिक मुस्लीम पीढी पर होने के कारण सामाजिक ऐक्य की स्थापना होकर नव विज्ञानिष्ठ समुदाय तयार होकर राष्ट्र निर्माण में प्रेरक सिध्द होगा।.

- संदर्भग्रंथ

- संपा. तांबोळी, शमसुद्दीन – 'मुस्लीम सत्यशोधक पत्रिका', वर्ष : 3 अंक 2, आवृत्ती जुलै, ऑगस्ट, सप्टेंबर 2016, च्हम छवण 23
- तांबोळी, शमसुद्दीन, 'हमिद दलवाई क्रांतीकारी विचारवंत,' डायमंड पब्लीकेशन, पुणे, आवृत्ती एप्रील 2014, च्हम छवण 15, 16.
- संपा. तांबोळी, शमसुद्दीन, 'मुस्लीम सत्यशोधक पत्रिका', वर्ष : 3, अंक 2, आवृत्ती जुलै, ऑगस्ट, सप्टेंबर 2016, च्हम छवण24.
- संपा. सिरसाठ, विनोद, 'साधना' (साप्ताहीक) प्रकाशक साधना प्रकाशन पुणे, 8 जानेवारी 2020, च्हम छवण15
- जमादार, आफताब, पाटील, अमोल, 'विवेका का आवज हमीद,' प्रकाशक राष्ट्रसेवा दल, आवृत्ती मे 2017, च्हम छवण 8
- दलवाई, मेहरुन्निसा, 'ॲग्री यंग सेक्युलॅरिस्ट,' साधना प्रकाशन, आवृत्ती जुलै 2017, च्हम छवण 69
- संपा. तांबोळी, शमसुद्दीन, 'मुस्लीम सत्यशोधक पत्रिका', वर्ष : 3, अंक 2 आवृत्ती जुलै, ऑगस्ट, सप्टेबर 2016, च्हम छवण 26
- संपा. तांबोळी, शमसुद्दीन, 'मुस्लीम सत्यशोधक पत्रिका', वर्ष 6, अंक 3, जाने, फेब्रु, मार्च 2020, च्हम छवण 47, 48
- संपा. सिरसाठ, विनोद, 'साधना' (साप्ताहीक) प्रकाशन पुणे, अंक 1, 8 जाने 2020, च्हम छवण 18, 19

Copyright © 2020Authors